17-2

1528
1971

(Home) विभाग DEPARTMENT/ मंत्रालय MINISTRY

शाखा BRANCH

मंत्रणा संग्रह
Consultation Collection Proscribed Publication

संख्या
No. 698

(185) (P)

दिनांक
Date सुन्दरलाल शर्मा (प्रकाशक)

विषय
Subject राष्ट्रीय संग्राम

पूर्व निर्देश
Previous reference

बाद का निर्देश
Later reference

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 698
Date 17-12-71
GOVT. OF INDIA

राष्ट्रीय संग्राम

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
30 MAR. 1931
DEPARTMENT

[एक अल्हैत]

सुमिरि भवानी भारत माता औ भगवान तिलक महराज ।
सुमिरि सूरमा सब स्वदेश के जिन तन दियो देश के काज ॥
साका गैयत रन सूरन को सुनि कै फरकि उठैं भुजदण्ड ।
थर थर थर थर लन्दन कांपै कापैं सात द्वीत नव खण्ड ॥
कठिन तपस्या है गांधी कै तप के मूर्तिमान औतार ।
आसन डोलि उठा इरविन का मन मां कांपि गई सरकार ॥
सत्याग्रही सूरमा बांके सजि सजि के ह्वै गये तयार ।
याकै बानी सब बोलत हैं है स्वतन्त्रता स्वत्व हमार ॥
यक दिन जनम लेत सब जगु है यक दिन मरै सकल संसार ।
जीवन मरन सार उनका है जो करि जांय देश-उद्धार ॥
पानी पवन जहां पर पावा पावा अन्न, दूध, दधि, पान ।
जनमु अकारथ भूलि जांय जो जन्मभूमि को हम एहसान ॥
कायर कढ़िल मरैं खटिया पर रन में जूझैं सिंह सपूत ।
चलैं अप्सरा वर माला लै आगे लेयँ स्वर्ग के दूत ॥
हल्ला ह्वैगा गाँउ गाँउ में कांग्रेस डौंड़ी दीन पिटाय ।
आई मुक्ति लेन कै बेरिया बढ़ि कै चलौ अगाड़ी भाय
छैल चिकनिया बनि तुम घूमत दुनिया तुम का कहै गुलाम ।
आये काम न जो गाढ़े मा तो मिटि जाय लोक से नाम ॥
सुनतै लाली चढ़ी मुखन पर मन मा उमगि परे सब बीर ।
कोऊ भिरे हिमाचल की दिशि कोऊ भिरे समन्दर तीर ॥
पहला हल्ला बस्त्र बिदेशी दूसर भई नमक कै लूटि ।
तीसर धावा भा शराब पर छक्के गये लाट के छूटि ॥
डंडा बरसे लाठी बरसीं सत्याग्रही शीश पर लेयँ ।
भिड़े सूरमा भारतबासी कालहु को जो बाउँ न देयँ ॥
भारत वीर पड़े बन्धन मा ऊधम जोति रही सरकार ।
बन्द ज़बानैं कीन्हीं सबकी औ सब बन्द कीन अखबार ॥
अगुआ धँधे परे जेलन मां पीसैं चक्की कूटैं बान ।
सत्याग्रही हटैं नहिं पीछे बिन हथियार करैं मैदान ॥
कठिन समैया आई भैया अब सब प्रन कर होउ तयार ।
समै-समैया की बातैं हैं मिलै न समया बारम्बार ॥
तुम्हैं उबारन के कारन भा गांधी बाबा का अवतार ।
खद्दर पहिरि जुटौ संगर मां तौ बेड़ा है पल्ले पार ॥
सूलै सहौ सेल सहि जाओ पर ना सहो जाति-अपमान ।
धीरज धारि सकति हैं अब नहिं उमड़े भारत वीर जवान ॥
जो तुम जूझौ स्वत्व-समर में जुग जुग साका चलै तुम्हार ।
जो दबि बैठे यहि औसर मा तुम्हरे जीबे को धिक्कार ॥
घर घर चरखा चलै गनागन सूत के गोला होयँ तयार ।
वारैं गन के वार धुस्स बनि, दर दर खद्दर के अम्बार ॥
घर की कती बिनी खादी हो मिल के वस्त्र देहु सब त्यागि ।
लहू मजूरन का इन मा है चरबी गाय सुवर कै लागि ॥
डटो सत्य पर सत्याग्रह कर वीरो विजय तुम्हारे हाथ ।
विजय धर्म के साथ रहति है औ है धर्म सत्य के साथ ॥

प्रकाशक—सुन्दरलाल शर्मा.

☞ नोट:—ग्रामों में मुफ्त बांटने के लिये जिला कांग्रेस कमेटी उन्नाव को डाक महसूल भेजकर जितनी कापियां चाहें मँगाई जा सकती हैं।

जार्ज प्रेस, चौक—कानपुर।